आने वाला कल...

कड़ी संख्या 6

भावी औद्योगिक कांति का आधार एआई...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

संकल्पना और समन्वय: डॉ। बी.के. त्यागी

पात्र

मेजर श्रीकांत– **करीब 24–30 वर्ष, फौज में कमांडो और एआई एक्सपर्ट है**

मेजर सोफिया– **करीब 30 वर्ष, डॉक्टर हैं और टेक्नोलॉजी जिज्ञासु**

कर्नल रमन– **करीब 45 वर्ष, कमंडिंग ऑफिसर**

सुबेदार मेजर राघव– 48 वर्ष, कैप्टन श्रीकांत के साथ पोस्टिड

पायलट, कैप्टन, सिस्टर/नर्स

दृश्य 1

(हैलिकॉप्टर के रोटर की तेज आवाज...धीरे–धीरे कम होती है और लोगों की आवाज बढ़ती है...ऐसा आभास जैसे हैलिकॉप्टर के अंदर लोग बैठकर जा रहे हैं...)

श्रीकांत – हॉय...आईएम मेजर श्रीकांत...आप?

मेजर सोफिया– मैं मेजर सोफिया...

श्रीकांत– अच्छा...अच्छा...अं...ये सुबेदार मेजर राघव जी...

राघव– जयहिंद मेजर सोफिया...

सोफिया– जयहिंद...आप लोग भी श्रीनगर जा रहे हैं?

श्रीकांत– नहीं, लद्दाख...

– हैलिकॉप्टर की तेज आवाज...फिर धीमी होती हुई...–

सोफिया– अच्छा...अच्छा आप एआई एक्सपर्ट हैं...तो लद्दाख में आपकी अभी काफी जरूरत भी है...मैं भी एयरफोर्स में आईओटी पर शोध कर रही हूं...

मेजर श्रीकांत– अच्छा, अच्छा...आईओटी बहुत बढ़िया...हां ये भी बहुत जरूरी है...पर इसमें हैकिंग का खतरा है और वैसे भी...

– राघव बीच में टोकता है –

राघव– **मेजर** श्रीकांत जी, यहां मैं भी बैठा हूं और आप मुझे चर्चा में शामिल करे बगैर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वो क्या है...आ...आई...आईओटी...पर बात कर रहे हैं...ये आईओटी क्या है?

श्रीकांत– अरे नहीं राघव जी आपको कैसे भूल सकता हूं...अं...असल में मेजर सोफिया मेरा और राघव जी के बीच ये समझौता है कि एआई से संबंधित हर बात में इन्हें मैं शामिल रखूंगा, जिससे ये अपने बच्चों के बीच एआई पर बात कर सकें...

मेजर सोफिया– अच्छा, सुबेदार राघव जी की भी रूचि है एआई में...अभी हम आईओटी की बात कर रहे थे...

राघव– जी, वो ही तो मैं जानना चाह रहा हूं कि ये आईओटी क्या है, मेजर सोफिया जी...

श्रीकांत– इंटरनेट ऑफ थिंग्स...आईओटी यानी इंटरनेट ऑफ थिंग्स...

राघव– इं...इंटरनेट...ऑफ...थिंग्स...मतलब?

सोफिया– **आईओटी यानी** इंटरनेट ऑफ थिंग्स...ये एक ऐसी टेक्नोलॉजी या कहें प्रणाली हैं जिसमें कंप्यूटिंग उपकरण, मेकेनिकल और डिजिटल मशीनें, वस्तुएं, पशु और मानव एक यूनिक आइडेंटिफाइर्स यानी यूआईडी से आपस में जुड़े होते हैं यानी इंटररिलेटिड होते हैं...

– हैलिकॉप्टर की तेज आवाज –

राघव– **हैं**...कंप्यूटर से मशीनों से जानवर और आदमी सब जुड़े होते हैं...वो कैसे? और इसका फायदा क्या?

श्रीकांत– आईओटी का फायदा ये है कि ऐसा नेटवर्क जिसमें डाटा ट्रांसफर करने के लिए मानव से मानव या मानव से कंप्यूटर के बीच इट्रैक्शन की आवश्यकता नहीं है। मतलब जैसे आपको कुछ भी डाटा डालने के लिए कंप्यूटर खोलकर टाइप करने की जरूरत नहीं है जैसे आप कितना चले, किससे मिले, कहां–कहां गए...ये सब जानकारी ऑटोमेटिक स्टोर होती जाएंगी...

सोफिया– ठीक कहा श्रीकांत...अब देखिए जैसे किसी व्यक्ति के दिल में हार्ट मॉनिटर लगा है या किसी गौशाला में गाय में बायोचिप लगी है या किसी कार में सेंसर लगा है जो ड्राइवर को कार में हवा कम होने की जानकारी दे सके...

श्रीकांत– हां...और अब बायोचिप आदमी में भी लगनी शुरू हो चुकी हैं...जिससे वो कब ऑफिस आया, कब गया...सारा हिसाब रखा जाता है, इसके अलावा उसकी कलाई में लगी इस चिप से किसी भी कमरे या ऑफिस का दरवाजा खुल सकता है और ये पता चल सकता है कि कितने बजे वो व्यक्ति लैब या ऑफिस में कहां था...

राघव– अच्छा! आदमी में ही कंप्यूटर जैसी चिप डल रही है...कमाल है...पर इसका फायदा क्या होगा...ये तो समझ आया कि नजर रखी जा सकती है, अटेंडेंस हो सकती है...और क्या हो सकता है?

सोफिया– राघव जी इस पूरी आईओटी प्रणाली किसी भी उद्योग या कार्यालय को बेहद दक्ष बना देता है साथ ही कस्टमर सेवाओं में सुधार, निर्णय लेने की क्षमता में सुधार और मानव कम समय में कम मेहनत में अधिक काम कर सकेगा...और उसके काम का बहुत सा बोझ तो कंप्यूटर ही ले लेगा...

राघव – तो इसमें एआई की भूमिका भी होगी?

श्रीकांत– हां, राघव जी, अब सभी को जोड़ा जा रहा है, एआई के द्वारा मशीन सीखती है, अब मानव की कई बातें मशीन सीखने लगी है और मशीन, कंप्यूटर, रोबोट आदि पक्षपात भी नहीं करते जैसे नौकरी देने का काम भी एआई के द्वारा हो रहा है...

राघव– हैं...नौकरी भी अब एआई दे रही है! मैं सोच रहा था कि नौकरी ले लेगी.. .

सोफिया– असल में राघव जी, कई कंपनियों में एचआर यानी मानव संसाधन का एक काम नए लोगों को नौकरी पर रखना भी होता है, अब हो सकता है कोई आदमी किसी सिफारिश या किसी रिश्तेदारी या किसी से कुछ काम निकलवाने के लिए, किसी ऐसे व्यक्ति को नौकरी दे दें, जो उस नौकरी के बिल्कुल लायक ना हो...

राघव– ऐसा तो खूब होता है मेजर सोफिया जी...इस भाई–भतिजावाद ने ही तो हमारी लुटिया डुबोई है...

श्रीकांत– हां, मशीन या रोबोट ऐसा नहीं करते, वो किसी के साथ कोई भेदभाव या पक्षपात नहीं करते...जो कंपनी या ऑफिस की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है, उसे ही नौकरी मिलेगी...

सोफिया– विशेषज्ञ इसे चौथी औद्योगिक क्रांति का नाम भी दे रहे हैं...

राघव– अब क्या वाकई में ऐसे रोबोट बन रहे हैं जो आदमी की जगह ले लेंगे?

सोफिया– हां क्यों नहीं, कई देशों में तो ट्रैफिक कंट्रोल करने का काम रोबोट ही कर रहे हैं और कई देशों में वेटर का काम भी रोबोट ही कर रहे हैं...

श्रीकांत– अरे स्मार्ट ग्रिड क्या हैं...मशीनों, कंप्यूटरों की बढ़ती इंटेलिजेंस ही तो है...

राघव– श्रीकांत साहब वैसे तो मुझे हैलिकॉप्टर में चक्कर नहीं आते पर आज आप आईओटी, मानव की जगह लेने वाले रोबोट, चौथी औद्योगिक क्रांति और अब **स्मार्ट ग्रिड**...आप ऐसी ऐसी जानकारी बता रहे हो कि मेरे दिमाग की चिप के लिए सब समेटना भारी हो रहा है...अब ये स्मार्ट ग्रिड क्या है?

– हैलिकॉप्टर की तेज आवाज – लोगों की आवाज के पीछे धीरे–धीरे हैलिकॉप्टर की आवाज आ रही है–

सोफिया– **हंसते हुए**– अरे राघव जी, स्मार्ट ग्रिड है तो बिजली की ही ग्रिड पर स्मार्ट है...

राघव – अब बिजली पहुंचाने वाली ग्रिड स्मार्ट कैसे?

श्रीकांत– राघव जी, ये ही तो बात है इस एआई, मशीन लर्निंग, स्मार्ट मशीन टेक्नोलॉजी की...असल में, स्मार्ट ग्रिड बिजली की आवश्यकता के अनुसार बिजली की आपूर्ति उस इलाके में बढ़ा देती है...जैसे...

सोफिया– जैसे...दिन में उद्योगों के लिए अधिक बिजली रात में आवासीय इलाकों के लिए...या ट्रैफिक के अनुसार रेड लाइटों का नियंत्रण...सब स्मार्ट ग्रिड अपने आप ही देख लेती है...

राघव– ओहो...इसीलिए स्मार्ट सिटी बन रही हैं...यानी एआई, स्मार्ट मशीन आदि के मेलजोल से...

श्रीकांत– बिल्कुल सही राघव जी और अब तो थ्री डी प्रिंटिंग भी आ गई है...

राघव– **थ्री डी प्रिंटिंग...**अब ये क्या है?

– तभी पायलट की आवाज –

पायलट– **लैंडिंग...**श्रीनगर एयरपोर्ट...

– हैलिकॉप्टर की तेज आवाज – हैलिकॉप्टर बंद बिल्कुल शांति –

सोफिया– चलिए मेरा डेस्टिनेशन आ गया...ठीक है मेजर श्रीकांत, सुबेदार मेजर राघव जी...अच्छा लगा आप लोगों से मिलकर...फिर मिलतें हैं...मिशन के लिए ऑल द बेस्ट...जय हिन्द...

दोनों एक साथ– जय हिन्द...

– हैलिकॉप्टर की तेज आवाज –

राघव– हां तो बताइए श्रीकांत जी...

श्रीकांत– क्या?

राघव– अरे थ्री डी प्रिंटिंग...?

श्रीकांत– क्या राघव जी...हमारा तय हुआ था कि अस्पताल में खाली समय पर एआई की बातें होंगी...अब तो थोड़ी देर में पहुंच ही जाएंगे...

राघव– अरे ये क्या बात हुई, अरे अस्पताल जाएं हमारे आपके दुश्मन...जब बात चल ही रही है तो बताइए कि ये थ्री डी प्रिंटिंग क्या बला है...

श्रीकांत– राघव जी...ये थ्री डी प्रिंटिंग असल में मशील लर्निंग का बढ़िया उदाहरण है...इसके जरिए कंप्यूटर में जो डाटा या डिजाइन होता है उसे ही बना देता है...जैस घर याा कोई बिल्डिंग या बर्गर आदि...

राघव– हैं...बर्गर भी!

श्रीकांत– हां...राघव जी...कई घर, सड़कें, बिल्डिंग आदि तो बन ही चुके हैं...यहां तक की जो ऐतिहासिक इमारतें ध्वस्त हो गईं हैं, उन्हें भी दोबारा बना लिया गया है...और हां...अब तैयारी ये है कि आप अपने कंप्यूटर में बर्गर डालें और थ्री डी प्रिंटर उसे बना देगा...

राघव– **हैं** टेक्नोलॉजी इतनी आगे जा चुकी है...

श्रीकांत– **अरे** अभी तो और आगे जा रही है...जैसे क्रिप्टोकरैंसी या जियो इंजीनियरिंग...

राघव– अब ये क्रिप्टोकरेंसी...ये...ये...जियो इंजीनियरिंग...ये क्या है...

– तभी पायलट की आवाज –

पायलट– **लैंडिंग** ओल्डी बेग...

– तभी तेज साइरन की आवाज –

पायलट– अलर्ट...मेन रोटर फेल...अलर्ट...मे डे...

राघव– ओ तेरी...

श्रीकांत– **स्ट्रैप** लगाओ राघव...ठीक से...

– तेज आवाज...पंखों की आवाज...–

– खांसी की आवाज –

श्रीकांत– **खांसते हुए–** राघव...तुम ठीक हो...

राघव– हां सर...

श्रीकांत– **खांसते हुए–** दोनों पायलट को देखों...

पायलट– **वी आर** फाइन...आप दोनों ठीक हैं...अरे मेजर श्रीकांत आपके सर से खून निकल रहा है...

राघव– अरे श्रीकांत सर, आप हेल्मेट मत उतारिए...मेडिक...

– कई सारे बूटों की आवाज –

आवाज– सब ठीक...ये घायल हैं...इन्हे पकड़ों...आप ठीक...इन्हें भी चोट लगी है...बेस कैंप में ले चलो...

– बूटों की आवाज...दूर जाती हुई...दृश्य परिवर्तन का संगीत–

नर्स– कोई खास नहीं है...थोड़ा माथे पर कट गया है...मैने पांच टांके लगा दिए हैं और पट्टी कर दी है...कहीं और तो दर्द नहीं हो रहा है...

श्रीकांत– **जोश के साथ–** नहीं कहीं कुछ दर्द नहीं है...ओह सीओ सर...

– बूटों की आवाज –

कर्नल रमन– कैसे हो मेजर और आप सुबेदार?

श्रीकांत– बिल्कुल ठीक सर...बस हल्की खरौंच है...

राघव– जय हिन्द सर...बिल्कुल ठीक

नर्स– सब नॉर्मल है सर...

रमन– वैरी गुड...तो मिशन के लिए तैयार...

दोनों एकसाथ– यस सर...

रमन– आज का मिशन तुम्हारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मिशन होगा...ये कैप्टन रवि हैं...कैप्टन इन्हे मेरे कैंप में ले आओ...मेजर, आप दोनों को मैं वहीं ब्रीफ करूंगा...जय हिन्द...

एकसाथ– जय हिन्द सर...

– दृश्य परिवर्तन का संगीत –

रमन– तो कैसा लगा प्लॉन...श्रीकांत, क्या राय है?

श्रीकांत– बिल्कुल बढ़िया सर...पर एक बात कहूं सर?

रमन– हां, बोलो...

श्रीकांत– सर, मैं इस एयर डिफेंस सिस्टम को एक घंटे में हैक कर लूंगा...साथ ही मेरा एआई सिस्टम दुश्मन के हर मूवमेंट पर नजर रखकर, हमें उसके हमले का इलाका, करीब दो घंटे पहले बता देगा...अगर, उत्तरी दिशा में अटैक हुआ, जो मुझे पूरी तरह लग रहा है, उसे मैं लीड करूं तो ठीक रहेगा...

रमन– तुम? तुम इसलिए लीड करना चाहते हो, क्योंकि वहां उनकी पूरी स्मार्ट वॉरफेयर की प्रणाली है? वैरी गुड...तुम अपनी टीम से मिल लो...तुम्हारे पास दो घंटे है मूव करने के लिए...

श्रीकांत– जी सर...जय हिन्द सर...

– बूटों की दूर जाती आवाज –

राघव– श्रीकांत सर, प्लॉन तो अच्छा है...पर अटैक में आप पहले मुझे जाने दो...

श्रीकांत– **क्यों?**

राघव– अरे श्रीकांत जी, आपके सर पर पहले ही चोट है और वैसे भी पिछली बार आपने मुझे कहा था कि अगली बार तुम लीड करना...

श्रीकांत– अरे राघव जी...इसबार मुझे ही लीड करने दो...अगली बार पक्का...

राघव– **चलिए** सर आपकी बात रख लेता हूं, वैसे भी मिशन से पहले आप घायल तो हो ही गए हैं, तो मिशन सुपर हिट होगा...

– हंसी–

राघव– **तो चलिए श्रीकांत** जी, अब थोड़ा समय भी है, तो आप वो...करेंसी...क्या थी?

श्रीकांत– क्रिप्टोकरेंसी...

राघव– हां, क्रिप्टोकरेंसी...क्या है ये?

श्रीकांत– राघव जी, ये वर्च्युअल पैसा है...मतलब, ये डिजिटल पैसा है जिसे खरीद–फरोख्त के लिए उपयोग किया जाता है...आज इसकी जरूरत भी काफी बढ़ गई है...

राघव– क्यों सर?

श्रीकांत– अरे राघव जी, जिस तरह से कोरोना का संक्रमण फैला है, इससे अब दुनिया काफी बदल गई है और एक बड़ा बदलाव ये भी है कि लोग अब पैसों को छूने से भी बच रहे हैं...पता नहीं कौन–सा नया संक्रमण इन नोटों पर चढ़कर पहुंच जाए...इसलिए अब ऐसी करेंसी जो किसी भी संपत्ति के बदले ली या दी जा सकती है औरर वो भी बिना छुए...

राघव– समझ तो आ रहा है, थोड़ा विस्तार से बताइए सर...

श्रीकांत– अब राघव जी विस्तार से तो आप अगली बार सुनना समझना, अब टाइम हो रहा है...

राघव– अरे सर, जियो इंजीनियरिंग तो समझ दो...

श्रीकांत– राघव जी, जियो इंजीनियरिंग यानी भू–इंजीनियरिंग, मतलब ये है कि...

– तभी बूटों की आवाज –

कैप्टन– सर टाइम...रेडी...चलें...

श्रीकांत– **रेडी** कैप्टन...चलिए...

– बूटों की आवाज दूर जाते हुए...दृश्य परिवर्तन का संगीत –

श्रीकांत– राधव जी, दुश्मन की एयर डिफेंस प्रणाली बस पंद्रह मिनट में निष्क्रिय हो जाएगी...हम सब उत्तरी दिशा से अटैक करेंगे...राघव जी, सभी को लेकर चलिए...

– बूटों की आवाज दूर जाते हुए –

श्रीकांत– **दबी आवाज में**– क्या हुआ राघव जी, सब ठीक...

राघव– **फुसफुसाकर**– अरे, श्रीकांत सर, ये मिशन तो अपनी जेब में है, बस जियो इंजीनियरिंग बीच में ही रह गया...

श्रीकांत– धीरे से– अरे राघव जी बस इतना समझ लो, ये जो ग्लोबल वार्मिंग है, या और कोई पर्यावरणीय समस्या है, उसे अब ठीक किया जा सकेगा...

राघव– **और धीमे से**– हैं कौन करेगा???

श्रीकांत–थोड़ा हंसकर– नैनो रोबोट्स...

राघव– बस श्रीकांत सर, बाकी मिशन के बाद...

श्रीकांत– हां अगली बार के लिए...**चिल्लाकर...**अटैक...

– तेज गोलाबारी की आवाजें –

श्रीकांत– चिल्लाकर – गोलाबारी की आवाजें चालू हैं – राघव...दायीं ओर से...वहां... कैप्टन नाऊ...यस...

– बहुत तेज धमाके की आवाज –

श्रीकांत– **चिल्लाकर– आगे** बढ़ो...भारत माता की...

कई सारी आवाजें एक साथ–...जय...

राघव– **चिल्लाकर – भारत** माता की...

कई सारी आवाजें एक साथ–...जय...

– तेज धमाके और गोलाबारी की आवाजें...बूटों की भागने की आवाजें –

– समाप्त –